THE STUDY
By Manikant Singh

कॉम्प्रिहेंसिव गाईड

UGC

NET/JRF

इतिहास

NET/JRF
परीक्षा में
इतिहास (06),
भारतीय संस्कृति (50)
एवं पुरातत्व (67)
विषय के लिए उपयोगी

मणिकांत सिंह

© सर्वाधिकार सुरक्षित : इस पुस्तक के किसी भी भाग को छापना तथा किसी अन्य माध्यम द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

प्रथम संस्करण: 2023

मूल्य: ₹ 550/-

Publisher :
The Study Publications

प्रकाशक:
द स्टडी पब्लिकेशन्स
210, दूसरी मंजिल, विराट भवन
(पोस्ट ऑफिस के नजदीक)
डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 011–27653672, 9999516388

नोट: इस पुस्तक को त्रुटि रहित बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है, फिर भी इसमें यदि कोई कमी अथवा त्रुटि रह जाती है तो इसमें लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने त्रुटि संबंधी सुधार एवं पुस्तक को उपयोगी बनाने संबंधी सुझावों को हमारी ईमेल आई.डी.- publication@thestudyias.net पर भेज सकते हैं।

प्राक्कथन

मणिकांत सिंह की कलम से.....

प्रिय अभ्यर्थियों,

विद्यार्थियों की भारी माँग एवं आग्रह को देखते हुए **'द स्टडी पब्लिकेशन्स'** द्वारा **इतिहास, भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व** विषय से सम्बंधित **UGC/NTA – NET/JRF** की प्रतियोगी परीक्षा के लिए उपयोगी इस पुस्तक को तैयार किया गया है। यह पुस्तक उन अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी जो इतिहास विषय से अकादमिक क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं। वस्तुत: ऐसे विद्यार्थियों का अच्छा-खासा अनुपात रहता है जो प्रतियोगी परीक्षा के साथ-साथ अपनी अकादमिक पढ़ाई भी जारी रखना चाहते हैं। यह पुस्तक आपके इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार की गई है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह पुस्तक विभिन्न विद्यालयों से जुड़ी एम.ए./पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षाओं के लिये भी उपयोगी है।

मेरे निर्देशन में द स्टडी टीम द्वारा इस पुस्तक को UGC/NTA – NET/JRF प्रतियोगी परीक्षा के इतिहास विषय के पाठ्यक्रम और विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के पैटर्न के अनुरूप तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम के जिस भाग को जितनी तथ्यात्मकता और जितने विस्तार से तैयार करने की आवश्यकता थी, पाठ्य सामग्री भी उसी अनुरूप समायोजित है। लगभग 455 पृष्ठों की इस पुस्तक में संपूर्ण पाठ्यक्रम को उसकी महत्ता के अनुसार संयोजित किया गया है। हमारी कोशिश रही है कि सामग्री इतनी सहज हो कि इसे तैयार करने के लिये आपको अतिरिक्त ऊर्जा न लगानी पड़े, साथ ही अभ्यास हेतु विगत वर्षों में पूछे गए **300 महत्वपूर्ण प्रश्नों का सेट** भी पुस्तक के अंत में दिया गया है ,ताकि परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नों के लिए आपको किसी अन्य स्रोत पर निर्भर न रहना पड़े। इस पुस्तक को तैयार किये जाने की प्रक्रिया अत्यंत सघन व प्रामाणिक रही है।

इस पुस्तक को लेकर आपका अनुभव कैसा रहा, यह भी हमसे साझा करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिये बहुमूल्य है। अपनी बात या पुस्तक से सम्बंधित किसी भी समस्या को आप ई-मेल आई.डी.- **publication@thestudyias.net** पर भेज सकते हैं। आपकी टिप्पणियों के आधार पर हम आगामी संस्करण को और बेहतर बना सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

मणिकांत सिंह

डायरेक्टर 'द स्टडी'

विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	इतिहास लेखन तथा शोध प्रविधि	01
2.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	39
3.	प्रागैतिहास तथा आद्य इतिहास	49
4.	वैदिक काल	78
5.	महाजनपद काल (छठीं शताब्दी ई. पू.)	86
6.	मौर्य काल	133
7.	मौर्योत्तर काल	142
8.	गुप्त साम्राज्य तथा भारत के क्षेत्रीय राज्य	157
9.	मध्यकालीन भारत के स्रोत	189
10.	दिल्ली सल्तनत	195
11.	क्षेत्रीय राज्य तथा भक्ति सूफी आंदोलन	239
12.	मुगल काल	257
13.	मराठा	293
14.	आधुनिक भारतीय इतिहास	297
15.	भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन तथा ब्रिटिश शक्ति का उदय	301
16.	ब्रिटिश उपनिवेशवाद	309
17.	संक्रमणाधीन भारतीय समाज	319
18.	राष्ट्रीय आंदोलन	338
19.	स्वातंत्र्योत्तर भारत (1947-1964 ई.)..	357
20.	विविध	361
21.	अभ्यास प्रश्न	373

01 इतिहास लेखन तथा शोध प्रविधि

इतिहास का क्षेत्र एवं महत्व

- इतिहास के क्षेत्र एवं महत्व का अध्ययन करने से पूर्व इतिहास की व्युत्पत्ति और अर्थ को समझना आवश्यक है। 'इतिहास' शब्द की व्युत्पत्ति 'इति' + 'ह' + 'आस' इन तीन शब्दों से निष्पन्न है जिसका अर्थ है कि 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ है।'
- व्युत्पत्ति की दृष्टि से यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' से इतिहास शब्द की उत्पत्ति मानी गई है। इसका अर्थ है विगत घटनाओं का विशेष एवं बोधगम्य विवरण।
- सर्वप्रथम 'हिस्ट्री' (इतिहास) शब्द का प्रयोग हेरोडोटस ने किया। इसलिए विद्वान इसे 'इतिहास का जनक' मानते हैं। 'हिस्ट्री' शब्द से हेरोडोटस का प्रयोजन गवेषणा एवं अनुसंधान था।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इतिहास की परिभाषा

- 'इतिहास सभ्य समाज में सन्निवसित मानवीय अनुभवों की कहानी है।' **– रेनियर**
- 'इतिहास अपरिवर्तनीय रूप में एक कहानी है।' **– जी. एम. ट्रेवेलियन**
- 'समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी इतिहास है।' **– हेनरी पिरेन**
- 'समस्त इतिहास का मूल उद्देश्य यह है कि अतीत की घटनाओं से हमें ऐसी शिक्षा प्राप्त हो, जो मनुष्य की इच्छाओं और कार्यों का पथ-प्रदर्शन कर सके।' **– चार्ल्स फर्थ**
- 'मनुष्य का जीवन ऐतिहासिक है क्योंकि वह मानसिक तथा आध्यात्मिक है। जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि मनुष्य ने क्या किया, वरन् उसके विचारों पर सोचना चाहिए। इतिहास कार्य प्रधान नहीं, अपितु विचार प्रधान है तथा इतिहास प्राचीन विचारों का पुनः प्रदर्शन करता है।' **–आर. जी. कॉलिंगवुड**
- 'विचार ही मानवीय कार्य-व्यापार का मूल स्रोत तथा उद्गम स्थल है। मानवीय कार्यों के लिए विचार प्रेरक शक्ति है।' **– डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय**
- 'सभी इतिहास समकालीन इतिहास है।' **– क्रोचे**
- 'इतिहास में अतीत के उन्हीं कार्यों तथा उपलब्धियों का उल्लेख होता है, जो हमारे वर्तमान का आधार होते हैं तथा वे हमारे भविष्य को प्रभावित करते हैं।' **– प्रो. माइकल ऑकशाट**
- 'सम्पूर्ण अतीत मेरा अपना है और मैं व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए इसका स्मरण करता हूँ।'**– रेनियर**
- 'इतिहास वस्तुतः इतिहासकार तथा तथ्यों के मध्य अंतः क्रिया की एक अविच्छिन्न प्रक्रिया है तथा अतीत एवं वर्तमान के मध्य एक अनंत-संलाप है।' **– ई. एच. कार**
- 'इतिहास अतीत एवं वर्तमान के मध्य एक सेतु है।' **– ई. एच. कार**
- 'इतिहास विगत मानवीय समाज का मानवतावादी एवं व्याख्यात्मक अध्ययन है जिसका उद्देश्य वर्तमान के बारे में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करना तथा भविष्य को प्रभावित करने की आशा जागृत करना है।' **– गैरोन्सकी**
- 'इतिहासकार का अनुभव ही इतिहास है। इतिहासकार के अतिरिक्त अन्य कोई इसका अनुभव नहीं कर सकता, इतिहास लेखन का अर्थ इतिहास की संरचना होती है।' **– प्रो. माइकल ऑकशाट**
- 'इतिहासकार अतीत के तथ्यों पर घटनाओं का एक परिकल्पनात्मक चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें वर्णित

- आहार के नीचे ग्राम होते थे जिसका प्रशासक 'गौल्मिक' कहलाता था।

सामाजिक दशा

- सातवाहनयुगीन समाज वर्णाश्रम धर्म पर आधारित था। इस समय अनेक नई-नई जातियाँ व्यवसायों के आधार पर संगठित होने लगी थीं।
- समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी तथा वे शासन के कार्यों में भी भाग लेती थीं।
- इस काल के समाज की प्रमुख विशेषता शकों तथा यवनों का भारतीयकरण था। इसके साथ ही जनजातीय तत्वों का भी आर्यों के साथ समन्वय हो रहा था।

धार्मिक दशा

- सातवाहन राजाओं का शासन-काल दक्षिण भारत में वैदिक धर्म की उन्नति का काल था। सातवाहन नरेशों ने अनेक वैदिक यज्ञों का सम्पादन किया।
- परन्तु स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी सातवाहन नरेश अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु थे, उन्होंने अपने शासन में बौद्ध तथा अन्य पंथों को भी संरक्षण और प्रोत्साहन प्रदान किया था।

आर्थिक दशा

- सातवाहन युग दक्षिण भारत के इतिहास में समृद्धि एवं सम्पन्नता का युग था। राजा, कृषकों की उपज का छठा भाग कर के रूप में प्राप्त करता था।
- कृषि की उन्नति के साथ ही साथ व्यापार-व्यवसाय की बहुत अधिक प्रगति हुई। मिलिंदपन्हो में 75 व्यवसायों का उल्लेख हुआ है जिनमें लगभग 60 प्रकार के व्यवसाय, विभिन्न कला कौशलों से संबद्ध थे।
- सातवाहन काल में आन्तरिक तथा बाह्य दोनों ही व्यापार उन्नति पर थे। पेरिप्लस, टॉलमी के भूगोल तथा सातवाहन लेख व मुद्राओं से तत्कालीन व्यापारिक प्रगति की सूचना मिलती है।

भाषा तथा साहित्य एवं कला-स्थापत्य

- सातवाहन काल प्राकृत तथा संस्कृत के विकास का समय था। हाल ने प्राकृत में 'गाथासप्तशती' की रचना की थी, जबकि गुणाढ्य द्वारा 'बृहत्कथा' को लिखा गया।
- रविवर्मन ने 'कातंत्र' नामक संस्कृत व्याकरण की रचना की। हाल की रानी मलयवती भी संस्कृत की विदुषी थी।
- सातवाहन नरेशों ने स्तूपों तथा चैत्य व विहारों का निर्माण करवाया। स्तूपों में अमरावती तथा नागार्जुनीकोण्डा के स्तूप विशेष उल्लेखनीय हैं।
- चैत्य व विहारों का निर्माण भाजा, कार्ले, पीतलखोरा, वेदसा, नासिक तथा अजंता आदि में देखा जा सकता है।

कुछ अन्य राजवंश

वंश	संस्थापक
आभीर	ईश्वरसेन
इक्ष्वाकु	श्रीशांतमूल
शालंकायन	हस्तिवर्मन
विष्णुकुंडिन	माधववर्मन प्रथम महानतम शासक

महामेघवाहन/चेदि वंश

- कलिंग के चेदि वंश का संस्थापक महामेघवाहन नामक व्यक्ति था। इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा खारवेल हुआ। जिसकी जानकारी का एकमात्र स्रोत हाथीगुम्फा अभिलेख है।
- खारवेल एक धर्म-सहिष्णु तथा उत्साही निर्माता था। स्वयं जैन होते हुए भी वह अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था। उसने अपनी राजधानी में अनेक भवनों का निर्माण करवाया, साथ ही उदयगिरि तथा खण्डगिरि में जैन भिक्षुओं हेतु गुहाओं का निर्माण करवाया।

10 दिल्ली सल्तनत

भारत पर अरबों एवं तुर्कों का आक्रमण

- इस्लाम धर्म के अनुयायियों में से भारत में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाले अरबी लोग थे। अरबों ने सिंध पर अधिकार करने में सफलता पायी, परन्तु वे भारत में एक स्थायी राज्य स्थापित करने में असफल रहे।

सिंध पर अरब आक्रमण

- सिंध पर अरबों का पहला सफल अभियान 711-12 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम द्वारा किया गया। यद्यपि इससे पूर्व सिंध पर दो असफल आक्रमण उबैदुल्ला एवं वर्दुल के नेतृत्व में हो चुके थे।

प्रभाव

- इतिहासकार कर्नल टॉड के अनुसार, "अरबों के आक्रमण से समस्त उत्तरी भारत हिल गया।" यद्यपि, टॉड ने अरब आक्रमण के प्रभावों को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर रेखांकित किया है।
- वूल्जे हेग ने इसे भारतीय इतिहास की कथा मात्र माना है। वहीं स्टेनले लेनपूल ने अरबों के आक्रमण को भारत और इस्लाम के इतिहास में एक क्षेपक मात्र कहा है।

भारत-अरब संपर्क के निम्नलिखित प्रभाव देखे जा सकते हैं–

- अरबों का सबसे अधिक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र पर पड़ा। इस समय समुद्री व्यापार पर अरबों का एकाधिकार था। अरब के साथ जुड़कर भारतीय व्यापारी यूरोप एवं अफ्रीका पहुँचे।
- भारतीय दशमलव प्रणाली को 9वीं सदी में अरब गणितज्ञ अलख्वारिज्मी ने अरब में लोकप्रिय बनाया। 'एबेलार' नामक भिक्षु ने यह ज्ञान बारहवीं सदी में यूरोप में पहुँचाया।
- आशीवार्दी लाल श्रीवास्तव महोदय के अनुसार, "अरबों ने भारतीय ज्ञान को यूरोप में फैलाया और 8वीं तथा 9वीं शताब्दी से यूरोप में जो ज्ञान की ज्योति फैली, उसका मुख्य कारण अरबों का भारत से सम्पर्क था।"
- भारतीय ग्रंथ पंचतंत्र का अरबी में अनुवाद इब्न-अल-मुकफ्फा ने 'कलीला' व 'दिमना' नाम से किया। ब्रह्मगुप्त की गणित की पुस्तक 'ब्रह्म स्फुट सिद्धांत' एवं खण्डनखाद्य का अरबी भाषा में अनुवाद अलहजारी एवं इब्राहिम पिंजरी द्वारा किया गया।
- सिंध में इस्लाम धर्म का प्रवेश हुआ तथा मुल्तान एवं मंसूरा में मुस्लिम बस्तियाँ स्थापित हुईं।

11वीं और 12वीं सदी में तुर्कों के आक्रमण और तुर्कों के राज्य की स्थापना

- भारत में तुर्कों का आक्रमण दो चरणों में सम्पन्न हुआ। प्रथम चरण का नेता महमूद गजनवी, तो दूसरे का मुहम्मद गोरी था।

महमूद गजनवी

- यह गजनी राज्य के संस्थापक अल्पप्तगीन के दास और दामाद सुबुक्तगीन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था।
- गजनी के दरबारी इतिहासकार उत्बी ने उसके आक्रमणों को जिहाद कहा है। किंतु, महमूद गजनवी के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य हिंद की दौलत प्राप्त करना था। इतिहासकार हैवेल का कथन है कि "वह बगदाद को भी वैसे ही निर्दयतापूर्वक लूटता जैसे सोमनाथ मंदिर को लूटा, यदि उसे वहाँ से इतना धन मिलने की आशा होती।"

प्रमुख अभियान

- हेनरी इलियट के अनुसार, महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया।

12 मुगल काल

राजनीतिक विकास

- मुगल, मंगोलों की ही एक शाखा थी। मुगल, तैमूर के वंशज थे। इसी आधार पर वे स्वयं को 'तैमूरिया' कहते थे।

बाबर (1526-1530 ई.)

- 14 फरवरी, 1483 ई. को बाबर का जन्म फरगना में हुआ था। उसका मूल नाम जहीरुद्दीन मुहम्मद था। वह पितृ वंश की ओर से तैमूर का 5वाँ वंशज था तथा मातृ पक्ष की ओर से चंगेज खाँ का 14वाँ वंशज था।
- उसके पिता उमर शेख मिर्जा फरगना के शासक थे तथा उसकी माता का नाम कुतलुग निगार खानम था।
- 1494 ई. में अपने पिता की मृत्यु के बाद 12 वर्ष की आयु में बाबर फरगना का शासक बना।
- शासक बनने के बाद बाबर ने अपने चाचा अहमद मिर्जा से समरकंद छीनना चाहा। इस हेतु उसने 3 बार प्रयास किए। 1501 ई. में वह 8 माह के लिए समरकंद पर नियंत्रण पाने में सफल रहा।
- किंतु उसके चाचा ने उज्बेग शासक शैबानी खाँ की मदद् से समरकंद को पुनः जीत लिया। इसी समय फरगना में बाबर के सौतेले भाई जहाँगीर मिर्जा को शासक बना दिया गया। अतः अब बाबर राज्यविहीन हो गया।
- अंततः 1504 ई. में उसने काबुल एवं गजनी जीता।
- 1511-12 ई. में बाबर ने ईरान के शाह इस्माइल सफवी की मदद् से समरकंद पर अधिकार करने में सफलता पायी, किंतु 1512 ई. में अब्दुल्ला खाँ उज्बेग ने 'कुल-ए-मलिक' नामक स्थान पर बाबर को पराजित कर दिया।
- दिखकाट नामक गाँव में प्रवास के दौरान उसे भारत के विषय में जानकारी मिली।
- अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी में वह कहता है कि काबुल की विजय से लेकर पानीपत की लड़ाई तक वह निरंतर भारतीय क्षेत्र पर नियंत्रण करने का ख्वाब देखता रहा।
- **बाबर द्वारा भारत पर आक्रमण करने के कारण निम्नलिखित थे–**
  - वह तैमूर का वंशज होने के नाते इस क्षेत्र पर अपना दावा रखता था।
  - काबुल, कंधार तथा बदख्शां के क्षेत्र से उसका प्रशासनिक खर्च पूरा नहीं हो पाता था।
  - भारत की विकेंद्रित राजनीतिक स्थिति उसके अनुकूल थी, जो उसे भारत की ओर आमंत्रित कर रही थी।
- इब्राहिम लोदी द्वारा एक केंद्रीकृत साम्राज्य बनाने का प्रयास किया जा रहा था जिसका विरोध पंजाब के अफगान सरदार दौलत खाँ लोदी एवं इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी तथा मेवाड़ के राणा संग्राम सिंह (सांगा) ने किया। इसी क्रम में आलम खाँ लोदी, दौलत खाँ लोदी एवं राणा सांगा ने बाबर को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।
- बाबर ने 1519 ई. में भारत पर पहला आक्रमण बाजौर एवं भेरा के किलों पर किया। भेरा, झेलम नदी के किनारे स्थित था। इसी युद्ध में भारत में पहली बार बारुद-तोपखाना का प्रयोग किया गया।
- फिर उसने सितंबर, 1519 ई. में दूसरा आक्रमण पेशावर, 1520 में तीसरा आक्रमण सियालकोट तथा चौथा आक्रमण 1524 में लाहौर एवं दीपालपुर पर किया।
- उसके द्वारा किया गया पाँचवा आक्रमण 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध के नाम से जाना जाता है।

पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526 ई.)

- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 को बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया। इसमें इब्राहिम लोदी की पराजय हुई और वह मारा गया।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान था जो युद्ध क्षेत्र में मारा गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुलगुमा युद्ध प्रणाली तथा उस्मानी या रूमी विधि का प्रयोग किया।
- **तुलगुमा पद्धति** – युद्ध की इस प्रणाली को बाबर ने उज्बेगों से सीखा था। इसमें सेना का एक भाग, मुख्य सेना के दायें एवं बायें किनारों पर कोतल या इतमिश सेना (Reserve Army) के रूप में खड़ा रहता था जो घूमकर शत्रु के पीछे से हमला करता था, यह भाग तुलगुमा कहलाता था।
- **उस्मानी या रूमी विधि** – इस युद्ध पद्धति का पहली बार प्रयोग उस्मानियों ने 1514 ई. में ईरान के विरूद्ध चाल्दीरान युद्ध में किया था। यह तोपों को सजाने की एक विधि है।
- बाबर इस युद्ध में अपनी जीत का श्रेय अपने घुड़सवारों एवं तीरंदाजों को देता है। डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव महोदय के अनुसार, बाबर की सफलता का कारण उसका तोपखाना था।
- बाबर के तोपखाने का प्रमुख उस्ताद अली कुली था, बाद में मुस्तफा भी इससे जुड़ा।
- इस युद्ध में इब्राहिम लोदी का साथ ग्वालियर के शासक विक्रमजीत ने दिया था, वह भी युद्ध में मारा गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में विजय के बाद बाबर के लिए दिल्ली तथा आगरा तक का क्षेत्र खुला था। उसने हुमायूँ को इब्राहिम लोदी के किले तथा खजाने पर अधिकार करने के लिए भेजा।
- युद्ध के बाद बाबर सर्वप्रथम निजामुद्दीन औलिया, फिर बख्तियार काकी की दरगाह पर गया।
- बाबर 10 मई को आगरा पहुँचा। हुमायूँ ने उसे भेंटस्वरूप कोहिनूर हीरा दिया जिसे बाबर ने हुमायूँ को ही सौंप दिया।

खानवा का युद्ध (16 मार्च, 1527 ई.)

- मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने अनुमान लगाया था कि बाबर दिल्ली और आगरा को लूटकर वापस चला जाएगा, किंतु बाबर ने भारत में रहने का निश्चय किया। अतः दोनों के बीच युद्ध अवश्यंभावी हो गया।
- 16 मार्च, 1527 ई. को राणा सांगा व बाबर के बीच खानवा का युद्ध हुआ। इसी युद्ध में बाबर ने जेहाद का नारा लगाया।
- राणा सांगा की मदद् हेतु एक संघ बनाया गया जिसमें राजपूत सरदार एवं मुस्लिम सरदार दोनों शामिल थे।
- राजपूत सरदारों में मारवाड़, अजमेर, ग्वालियर, अम्बेर तथा चंदेरी शामिल थे, तो मुस्लिम सरदारों में रायसीन का सिलहदी, इब्राहिम लोदी का भाई महमूद लोदी तथा मेवात का शासक हसन खाँ मेवाती शामिल थे।
- इस युद्ध से संबंधित सेनाओं के संदर्भ में रसब्रुक विलियम के अनुसार बाबर तथा राणा सांगा की सेना का अनुपात 1: 8 था, परंतु आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव का मानना है कि यह अनुपात 1: 2 था।
- इस युद्ध में राणा सांगा की पराजय हुई। यह युद्ध पानीपत के प्रथम युद्ध से अधिक निर्णायक सिद्ध हुआ क्योंकि खानवा के युद्ध में बाबर ने एक शक्तिशाली संघ को पराजित किया था। इसलिए अब उत्तर भारत में मुगल सत्ता को चुनौती देने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची थी।
- सर्वप्रथम इसी युद्ध में विजय के पश्चात् बाबर ने 'गाजी' की उपाधि धारण की।

चम्पारण सत्याग्रह (1917ई.)

- चम्पारण में नील के खेतों में काम करने वाले किसानों पर यूरोपीय मालिक बहुत अधिक अत्याचार करते थे। किसानों को अपनी जमीन के कम से कम 3/20 भाग पर नील की खेती करना तथा उन मालिकों द्वारा तय दामों पर उन्हें बेचना पड़ता था। इसे 'तिनकठिया पद्धति' भी कहा जाता था।
- किसानों को अत्याचार से मुक्त कराने के लिए एक किसान 'राजकुमार शुक्ल' ने गाँधी जी से लखनऊ में भेंट की और उनसे चम्पारण आने का आग्रह किया।
- चम्पारण में गाँधी जी के सहयोगी राजेन्द्र प्रसाद, जी. वी. कृपलानी, महादेव देसाई, मजरूल हक, नरहरि पारिख व बृज किशोर थे।
- सरकार ने पूरे मामले की जाँच के लिए एक आयोग बनाया तथा गाँधी जी को भी इसका सदस्य बनाया गया।
- यूरोपीय, निलहे किसानों को 25% राशि वापस करने के लिए राजी हो गए और गाँधी जी ने इसे स्वीकार कर लिया। इस प्रकार गाँधी जी द्वारा चलाया गया पहला सत्याग्रह सफल रहा।
- एन.जी. रंगा ने महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह का विरोध किया था, जबकि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने चम्पारण के दौरान ही इन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी थी।

अहमदाबाद का मजदूर आन्दोलन (1918ई.)

- चम्पारण की सफलता के बाद गाँधी जी का अगला प्रयोग अहमदाबाद के मिल मजदूरों को लेकर था।
- यहाँ का विवाद प्लेग बोनस को लेकर था। गाँधी जी अनशन पर बैठ गए, तब मिल मालिकों ने यह मामला न्यायाधिकरण को सौंपने के लिए कहा।
- न्यायाधिकरण ने 35% बोनस देने को कहा। इस संघर्ष में अम्बालाल साराभाई की बहन अनुसुईया बेन गाँधी जी की मुख्य सहयोगी रहीं, जबकि उनके भाई अम्बालाल साराभाई, गाँधी जी के मित्र होते हुए भी उनके विरोधी रहे।

खेड़ा सत्याग्रह (1918ई.)

- वर्ष 1918 के भीषण दुर्भिक्ष के कारण गुजरात के खेड़ा जिले में पूरी फसल नष्ट हो गई, फिर भी सरकार ने किसानों से मालगुजारी वसूल करने की प्रक्रिया जारी रखी।
- जबकि 'राजस्व संहिता' के अनुसार, यदि फसल का उत्पादन कुल उत्पादन के एक-चौथाई से कम हो, तो किसानों का कर पूरी तरह से माफ कर दिया जाना चाहिए।
- किंतु सरकार ने राजस्व माफ करने से मना कर दिया। अत: गाँधी जी ने किसानों से कर न देने का आग्रह किया। इसके बाद उन्होंने सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा इन्दुलाल याज्ञिक के साथ गाँवों का दौरा किया।
- अंत में सरकार ने घुटने टेक दिए और केवल उन्हीं किसानों से कर वसूला जो कर देने में सक्षम थे।

खिलाफत आन्दोलन

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान तुर्की के खलीफा के मुद्दे पर भारतीय मुसलमान ब्रिटिश सरकार से नफरत करने लगे और ऐसे मौके को हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए उपयुक्त समझा गया।
- गाँधी जी ने मुसलमानों के साथ सहानुभूति व्यक्त की। 23 नवम्बर, 1919ई. को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन हुआ और गाँधी जी को इसका अध्यक्ष चुना गया। इनके सुझाव पर असहयोग एवं स्वदेशी की नीति अपनाई गई।
- आगे 20 जून, 1920ई. को इलाहाबाद में हुई दूसरी बैठक में असहयोग के अस्त्र को अपनाए जाने का निर्णय लिया गया। सितम्बर, 1920ई. में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में असहयोग आन्दोलन को स्वीकार कर लिया गया।
- परन्तु इस आन्दोलन का सबसे प्रमुख विरोध सी.आर. दास ने किया। कांग्रेस के अन्य नेताओं, जैसे- जिन्ना,

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	IV	III	II	I
(b)	III	IV	I	II
(c)	IV	I	II	III
(d)	II	IV	III	I

(दिसम्बर-2018)

102. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए।

सूची-I (कलाकार)	सूची-II (प्राप्त उपाधि)
(A) अब्दुस समद	I. ज़रीन कलम
(B) अबुल हसन	II. नादिर-उल-अस्त्र
(C) कश्मीर का मुहम्मद हुसैन	III. शीरीन कलम
(D) उस्ताद मंसूर	IV. नादिर-उज़ ज़माँ

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	II	IV	I	III
(b)	IV	III	II	I
(c)	I	II	III	IV
(d)	III	IV	I	II

(दिसम्बर-2018)

103. जेम्स मिल और उनके उपयोगितावाद के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) उपयोगितावादी होने के नाते जेम्स मिल संस्कृत और फारसी विद्या के दृढ़ समर्थक थे।

(b) जेम्स मिल का मत था कि प्राच्यवेत्ता, प्राच्य अधिनायकवाद के क्षय के उन्मूलन में सहायता करने के बजाय इसको जारी रखने के दोषी थे।

(c) जेम्स मिल ने हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया को लिखकर भारतीय इतिहास का साम्प्रदायिक आधार पर वर्गीकरण किया।

(d) मिल ने भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के कानूनी समाधानों का प्रयास किया।

(दिसम्बर-2018)

104. भारतीय इतिहास लेखन की मार्क्सवादी विचारधारा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) जहाँ तक राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन का संबंध है, आर.पाम दत्त और ए.आर. देसाई ने इस विचारधारा की आधारशिला रखी थी, लेकिन अनेक अन्य ने बाद के वर्षों में इसको विकसित किया।

(b) वे राष्ट्रीय आंदोलन को एक संरचनात्मक बुर्जुआ आंदोलन के रूप में देखने को प्रवृत्त होते हैं।

(c) वे राष्ट्रीय आंदोलन की वर्गीय प्रकृति की व्याख्या उसके संघर्ष के रूपों, उसके रणनीतिक रूप से पीछे हटने और समझौते के अर्थों में करते हैं।

(d) उनका मानना है कि वित्तीय संसाधनों तक पहुँच राष्ट्रीय राजनीति के पथ और दिशा को प्रभावित करने की सक्षमता को निर्धारित नहीं करती।

(दिसम्बर-2018)

105. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिएः

118. सूची-I में दिये गये भवन निर्माण क्रियाकलापों में संलग्न कारीगरों को सूची-II में दिये गये इसके आधुनिक अभिधानों के साथ सुमेलित करें और सूचियों के नीचे दिए गये कूट में से सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (कारीगर)	सूची-II (आधुनिक अभिधान)
(A) आहकपूजान	I. राजगीर
(B) ख्रिश्तमालान	II. नक्काश
(C) पर्चीनकार	III. ईंट तोड़नेवाला
(D) सुर्खीकोब	IV. चूनगर

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	IV	III	II	I
(b)	II	III	IV	I
(c)	III	IV	I	II
(d)	IV	I	II	III

(जुलाई-2018)

119. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (लेखक)	सूची-II (पुस्तक)
(A) इब्ने हसन	I. द प्रॉविन्शियल गवर्नमेंट ऑफ द मुगल्स
(B) पी. सरन	II. इंडिया एट द डेथ ऑफ अकबर
(C) मोरलैण्ड	III. द मुगल नोबिलिटी अंडर औरंगजेब
(D) एम. अतहर अली	IV द सेंट्रल स्ट्रक्चर ऑफ द मुगल एम्पायर

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	I	II	III	IV
(b)	IV	III	II	I
(c)	II	I	IV	III
(d)	IV	I	II	III

(जुलाई-2018)

120. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (लेखक)	सूची-II (पुस्तक)
(A) जॉन विलियम केय	I. द इंडियन म्यूटिनी इन पर्सपेक्टिव
(B) जी. बी. मालेसन	II. द अदर साइड ऑफ द मेडल
(C) एडवर्ड जे. थॉम्पसन	III. ए हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वॉर इन इंडिया
(D) सर जॉर्ज मैकमून	IV. इंडियन म्यूटिनी इन 1857

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	III	IV	II	I
(b)	IV	III	I	II
(c)	II	I	IV	III
(d)	III	I	II	IV

(जुलाई-2018)

4. शेरशाह का मकबरा : सासाराम

नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर का चयन कीजिए-

(a) 1-3-2-4 (b) 2-4-1-3
(c) 2-3-4-1 (d) 2-1-3-4

(जनवरी-2017)

199. हर्ष के अतिरिक्त चीनी यात्री युवान च्वांग को किन अन्य समकालीन शासकों से मिलने का अवसर मिला था?

1. गौड़ नरेश 2. कश्मीर नरेश
3. काञ्ची नरेश 4. वलभी नरेश

कूटः

(a) 1, 2 और 3 (b) 1, 3 और 4
(c) 1, 2 और 4 (d) 2, 3 और 4

(जनवरी-2017)

200. शाहजहाँ द्वारा बनवाए गए निम्नलिखित भवनों को उनके निर्माण के ऐतिहासिक क्रम में दर्शाएँः

1. आगरा के किले मे दीवान-ए-आम
2. आगरा के किले मे मोती मस्जिद
3. ताजमहल, आगरा
4. जामा मस्जिद, शाहजहाँनाबाद

नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर का चयन कीजिए-

(a) 1-3-2-4 (b) 2-3-1-4
(c) 3-2-4-1 (d) 3-4-2-1

(जनवरी-2017)

201. नीचे दो कथन दिए गए हैंः इनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया हैः

कथन (A) : भारत के अभिजातवर्गीय एवं राज परिवारों को शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत में चीफ्स कॉलेज की स्थापना की गई थी।

कारण (R) : मूल निवासी आपनी भाषाओं में नहीं, बल्कि अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक थे।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, किन्तु (R) सही है।

(जनवरी-2017)

202. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिएः

सूची-I (नेता)	सूची-II (संगठन)
(A) एम. सी. रजा	I. ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लासेज़ लीग
(B) जगजीवन राम	II. ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लासेज़ कांग्रेस
(C) बी. आर. आम्बेडकर	III. ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लासेज़ ऐसोसियेशन
(D) महात्मा गाँधी	IV. ऑल इंडिया हरिज़न संघ

कूटः

04 वैदिक काल

- सैंधव सभ्यता के बाद भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ, उसे 'वैदिक सभ्यता' के नाम से जाना जाता है। आर्यों का इतिहास हमें वेदों से ज्ञात होता है। वस्तुत: आर्य एक भाषिक शब्द है, जिससे भारोपीय मूल के एक भाषा-समूह का पता चलता है।

मूल निवास स्थान

स्थान	विद्वान
ब्रह्मर्षि देश	पं. गंगानाथ झा
देविका (मुल्तान)	डी.एस. त्रिवेद
कश्मीर	एल.डी. कल्ल
उत्तरी ध्रुव	पं. बालगंगाधर तिलक
मध्य एशिया	मैक्समूलर
पामीर पठार	एडवर्ड मेयर
जर्मनी	पेंका एवं हर्ट
हंगरी	गाइल्स
दक्षिणी रूस	मेयर, पीक तथा गॉर्डन चाइल्ड
सप्त सैंधव प्रदेश	डॉ. अविनाश चन्द्र दास

- वैदिक सभ्यता को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है–
  i. ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)
  ii. उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल

- इस काल का इतिहास हमें पूर्णतया ऋग्वेद से ज्ञात होता है। ऋग्वेद एक संहिता है जिसमें 10 मण्डल हैं। इसमें 2 से 7 तक प्राचीन माने जाते हैं। इसे 'वंश मंडल' कहा जाता है।

मण्डल	संबंधित ऋषि
दूसरा मण्डल	गृत्समद
तीसरा मण्डल	विश्वामित्र
चौथा मण्डल	वामदेव
पाँचवां मण्डल	आत्री
छठा मण्डल	भारद्वाज
सातवां मण्डल	वशिष्ठ ऋषि
आठवां मण्डल	कण्व ऋषि
नौंवां मण्डल	अंगिरा

- **ऋग्वेद की 5 प्रधान शाखाएँ हैं–** शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकेय या माण्डूकायन। इसमें से भी केवल तीन पाठ उपयोगी हैं–
  1. शाकल – ऋग्वेद से जुड़ी एकमात्र जीवित शाखा, इसमें 1017 सूक्त हैं।
  2. बालखिल्य – इसमें कुल 11 सूक्त हैं।
  3. वाष्कल – इसमें कुल 56 सूक्त हैं।
- पूरे ऋग्वेद को 8 समान भागों में बाँटा गया है। इसीलिए इन्हें 'अष्टक' कहते हैं। ऋग्वेद का सर्वाधिक लोकप्रिय छंद 'त्रिष्टुप' है।

ऋग्वेद की तिथि

विद्वान	आधार	तिथि
• मैक्समूलर	बौद्ध साहित्य तथा गौतम बुद्ध का उदय	1200-1000 ई.पू.
• विन्टरनित्स	मितानी अभिलेख	2500-2000 ई.पू.
• अविनाश चन्द्र दास	भूगर्भ	25000 ई.पू.

Our Study Materials

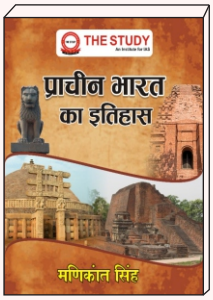

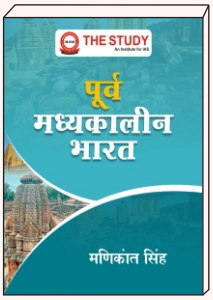

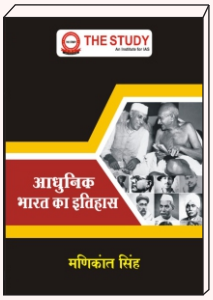

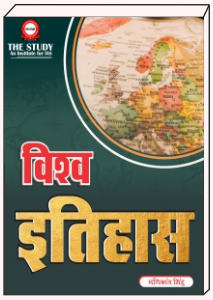

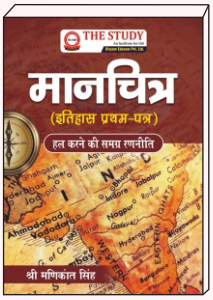

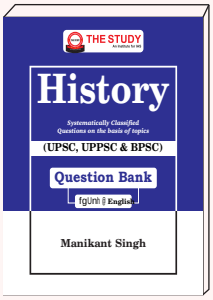

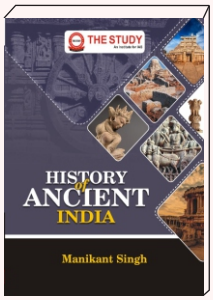

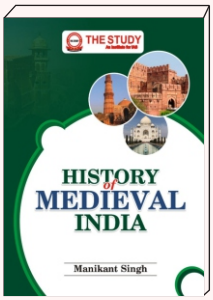

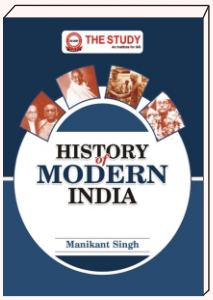

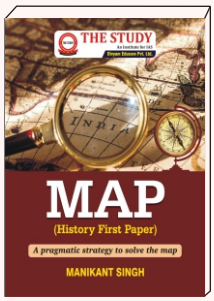

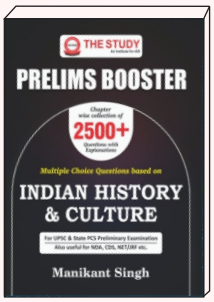

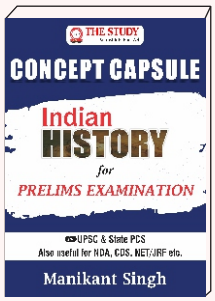

For any query please contact:

9999516388, 8595638669

DOWNLOAD APPLICATION

for

HISTORY OPTIONAL COURSE (UPSC/PCS)

Separate Batches for Both

HINDI AND ENGLISH MEDIUM

GET IT ON Google Play

Manikant Singh

App Features

- Complete History Optional Course (for both Medium)
- Weekly Live doubt classes
- Modules wise Courses Available
- Printed Study Material Sent to Home via Post
- Free Weekly/Monthly Test
- Free Demo Videos
- Daily Translated Article of The Hindu, Indian Express etc.

OUR BATCHES

- Offline Batch
- Online Live Batch
- Offline Video Course
- Recorded Classroom Course
- Pen Drive Course
- Answer Enrichment Course
- Annual Practice Test Series

To download Our Application

Our website QR Code

OUR MAINS TEST SERIES PROGRAMME

UPSC

Annual Practice Test Series

Follow us: YouTube

210, Virat Bhawan, IInd Floor, Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9

: 9999516388, 8595638669

: info@thestudyias.net • thestudyias@gmail.com

TS PUBLICATIONS